तर्ज- मुझे रास आ गया है

पर्दा नशीं अब अपना,पर्दा जरा उठाओ
मिलने को रूहें तरसीं,अब तो गले लगाओ

रूबाई-पर्दे पे पर्दा,तिस पे पर्दा,क्यूं पिया ऐसा किया
हो गई गुमराह रूहें,बस यहीं अपना गुनाह

1- फरामोशी दे दी ऐसी,कि निसवत ही भुला दी
पहचान देके अपनी,कहते हो ये है जागनी
पर्दे में है जगाया,बेपर्दा होके जगाओ

2- हुकम के पर्दे ने पिया,जलवे बहुत दिखाये
कठपुतलीयां बनी रूहें,नाचे हुकम नचाए
चाहो जैसे नाचेंगी पिया,अब तो रीझ जाओ

3- ऐसा बनाया खेल ये,कैसे देखें हम पिया
आतम के तन हैं हुकम के,दिल में तो हो तुम्हीं पिया
जो चाहो तुम हुकम वो करे,हांसी रूहों की होय
चाहो जितनी हांसी करना पिया,पर्दा तो अब हटाओ
मिलने को...

4- सबसे नजीक पर्दा,डाला था तुमने तन का
किए कौल सारे पूरे,सतगुरू बन के पिया
किए सारे लाड पर्दे में,पर्दा नहीं गंवारा

5- इक पर्दा तो उड़ा दिया,तन का था जो पिया
अब हुकम को हुकम दो,नहीं रहना अब पिया यहां
रूबरू अब हों नज़रें,और कुछ नज़र न आये